B.A. III Hindi Hons.

'रस निष्पत्ति' का शोधगाथा

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक,
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

पिछली कक्षा में हमने रस निष्पत्ति पर विचार करते हुए भरतसूत्र के प्रथम व्याख्याता आचार्य भट्ट लोल्लट के आरोपवाद का अध्ययन किया था। आज उनके द्वारा विवेचित आरोपवाद की विशेषताओं और सीमाओं पर विचार करेंगे।

डॉ० नगेन्द्र ने भारतीय काव्यशास्त्र पर गहन अध्ययन किया है तथा रस के विभिन्न वादों की भी सूक्ष्म विवेचना की है। उन्होंने इनके द्वारा प्रतिपादित 'आरोपवाद' के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किए हैं।

डॉ० नगेन्द्र की मान्यता है कि भट्ट लोल्लट का आरोपवाद भरत-सूत्र की व्याख्याओं में मूल के सर्वाधिक निकट है। रस को अनुकार्यगत मानने का आशय यह है कि काव्य और नाट्य सौन्दर्य का प्रत्यक्ष ~~सम्बन्ध~~ सम्बन्ध मूल पात्र के भावों के साथ है और चूंकि मूलपात्र के भावों तथा उनसे प्रेरित कार्यों से ही काव्य या नाट्य की विषय-वस्तु का निर्माण होता है। अतः यह सिद्ध होता है कि काव्य अथवा नाट्य का मूल सौन्दर्य उसके विषय-वस्तु में ही निहित रहता है। इस प्रकार भट्ट लोल्लट कला में वस्तु के महत्व की स्थापना करते हैं।

रस की व्यक्तिपरक व्याख्या का सूत्रपात यहीं से होता है। कलात्मक स्थिति आगे बढ़कर रस मनःस्थिति तक पहुँच जाता है, यद्यपि यह मनःस्थिति सहृदय की नहीं है फिर भी व्यक्ति की सत्ता इसमें सर्वथा स्पष्ट है।

अभिनेता द्वारा रसानुभूति की घोषणा कर ... के विकास में एक नया मोड़ उपस्थित किया।

भट्ट लोल्लट के मत की सीमाएं :- भट्ट लोल्लट की उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद कुछ सीमाएं भी हैं —

भरत को जहाँ अव्यक्तिगत स्थायी भाव अभिप्रेत था, वहाँ अभिनवगुप्त आदि का अभिप्राय सहृदय के स्थायी भाव से था। भट्ट लोल्लट ने इन दोनों से भिन्न तीसरा अर्थ किया — अनुकार्य का स्थायीभाव और अनुकार्य के विषय में ये मूल पात्र और कवि निबद्ध पात्र का भेद स्पष्ट नहीं कर पाये।

इन्होंने संयोग का अर्थ कार्य-कारण भाव माना है। स्थायीभाव कार्य नहीं हो सकता। यदि यह कार्यभाव माना जाता है तो विभाव आदि को निमित्त कारण मानना पड़ेगा। निमित्त कारण के नष्ट होने पर भी कार्य बना रहता है किन्तु विभाव आदि नष्ट होने पर रस नहीं बना रहता।

भट्ट लोल्लट के मत को इन सीमाओं के बाद भी इन का बहुत महत्व है विशेषत: इसलिए कि परवर्ती आचार्यों के लिए रस-निष्पत्ति पर चिंतन-मनन करने का द्वारा खुल जाता है।